03 / 12 / 78 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

पाप और पुण्य की
गुह्य गति का अनुभव

➢➢ आवाज से परे स्थिति में स्थित होने का अनुभव

➳ _ ➳ मैं एक महान आत्मा हूँ

→ मैं आत्मा इस तन में अवतरित हुई आत्मा हूँ

◆ देह में रहते देह ओर देह के सर्व सम्बन्धियों से

◆ मैं आत्मा भिन्न हूँ, न्यारी हूँ

● मैं आत्मा प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा एक सेकेण्ड में

→ इस आवाज़ की दुनिया से परे हो

◆ आवाज़ से परे दुनिया की

● निवासी बन रही हूँ

➳ _ ➳ जितना मुझ आत्मा को आवाज़ में आने का

→ अभ्यास है उतना ही

◆ सुनने का भी अभ्यास है

● आवाज़ को धारण करने का भी अभ्यास है

➳ _ ➳ मैं आत्मा आवाज़ से परे स्थिति में स्थित हो

→ सर्व प्राप्ति करने का अनुभव कर रही हूँ

◆ आवाज़ द्वारा रमणीकता का अनुभव करती हूँ

◆ सुख का अनुभव करती हूँ

● ऐसे ही आवाज़ से परे

→ अविनाशी सुख-स्वरूप रमणीक अवस्था

→ का अनुभव मैं आत्मा कर रही हूँ

◆ स्मृति का स्विच ऑन किया

● और ऐसी स्थिति में स्थित

● मैं आत्मा हो जाती हूँ

◆ ऐसी रूहानी लिफ्ट की गिफ्ट

● मुझ आत्मा को प्राप्त है

➢➢ मैं आत्मा विश्व सेवाधारी हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा सेकेण्ड के इशारे से

→ एकरस स्थिति में स्थित होने का

◆ रूहानी लश्कर तैयार करती हूँ

● मैं आत्मा सदा एवररेडी हूं

➳ _ ➳ मैं ब्राह्मण आत्मा एक की याद में

→ एकरस स्थिति में स्थित हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा विश्व परिवर्तक हूँ

→ मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा

◆ विश्व को अपनी वृत्ति वा वायब्रेशन द्वारा

◆ स्मृति स्वरूप के समर्थी द्वारा

● चारों ओर शक्तिशाली वाइब्रेशन फैला रही हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा विश्व सेवाधारी हूँ

→ योग द्वारा शक्तियाँ कौन सी

→ और कहाँ तक फैलती हैं

◆ उनकी विधि और गति क्या होती है

● सभी आत्माओ को यह

● प्रत्यक्ष अनुभव करा रही हूँ

➳ _ ➳ समय प्रमाण अब मैं आत्मा

→ व्यर्थ की बातों को छोड़

◆ समर्थी स्वरूप बनने का

● अनुभव कर रही हूँ

➢➢ मैं आत्मा पाप और पुण्य की गुह्य गति ज्ञाता हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा स्वयं की चेकिंग करती हूँ कि

→ जो भी कर्म मैं आत्मा करती हूँ

◆ वह पाप के खाते में जमा होता है

● या पूण्य के खाते में

➳ _ ➳ सबसे पहले पाप के खाते

→ कौन कौन से है

◆ वह मैं आत्मा स्मृति में लाती हूँ

● किसी को दुख देना

● ईर्ष्या भावना

● धृणा भावना

● व्यर्थ भावना

● व्यर्थ संकल्प

● व्यर्थ बोल

● संकल्प में भी स्वयं की कमजोरी

● कोई भी विकार के वशीभूत होना

● यह सब पाप के खाते में जमा होते है

➳ _ ➳ मैं आत्मा संकल्प में भी

→ इन सबसे मुक्त हूँ

◆ क्योंकि मैं आत्मा पाप कर्मों की

● गुह्य गति ज्ञाता हूँ

➳ _ ➳ एक पाप कर्म करने से

→ उसकी 100 गुणा सज़ा भुगतनी पड़ती है

→ इसलिए मन्सा-वाचा-कर्मणा

◆ अपने पर पूरा अटेंशन

● रख पुण्य का खाता ही जमा करती हूँ

→ संकल्प और वृत्ति से भी

◆ सर्व विकारों से मैं आत्मा

● सदा सदा के लिये मुक्त हूँ

→ मैं आत्मा अब सदा समर्थ ही सुनती हूँ

◆ समर्थ ही सुनाती हूँ

● और सदा समर्थ ही सोचती हूँ

→ सदा समर्थ संकल्प

◆ और समर्थ बोल ही

● बोलती हूँ

→ मैं आत्मा अब सदा

◆ शुभ भावना से सोचती हूँ

- शुभ बोल ही बोलती हूँ

→ मैं आत्मा सदा सर्व आत्मा के प्रति

- ◆ शुभ भावना और शुभ कामना
  - ● ही रखती हूं

→ मैं आत्मा सदा शुभचिंतक बन

- ◆ सर्व आत्माओं के बोल के भाव को
  - ● श्रेष्ठ भाव और भावना में
  - ● परिवर्तित करती हूँ

➳ _ ➳ मैं ईश्वरीय संतान

→ बाबा के सर्व ख़ज़ानों की अधिकारी

- ◆ पूण्य आत्मा हूँ
  - ● सदा पुण्य का खाता ही जमा करती हूँ

→ बाप को जाना

- ◆ बाप के वर्षे को जाना
  - ● ब्रह्माकुमारी बन गई

→ माना अब तो बस पुण्य ही पुण्य है

- ◆ सब पुराने पाप के खाते
  - ● सम्पूर्ण रीति से मुझ आत्मा के खत्म हो गए

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा पुण्य और पाप दोनों का ज्ञान

→ बुद्धि में रख

- ◆ ब्रह्माकुमारी जीवन के हर नियमों
- ◆ और हर मर्यादाओं को
  - ● सामने रख

➳ _ ➳ अपनी हर प्रकार की चलन द्वारा

→ बाप व नॉलेज का

- ◆ नामबाला करती हूँ
  - ● और पुण्य का ही खाता जमा करती हूँ